विषय-सूची

क्रम संख्या	पाठ	रचनाकार	पृष्ठ संख्या
1.	हम पंछी उन्मुक्त गगन के (कविता)	शिवमंगल सिंह 'सुमन'	1
2.	असल धन (कहानी)	अबराद मोहसिन एवं कामरान मोहसिन	4
3.	अच्छे पड़ोसी के गुण (निबंध)	गोपाल चतुर्वेदी	12
4.	दोपहरी (कविता)	शकुंत माथुर	17
5.	*आकाश को सात सीढ़ियाँ (कहानी)	शान्तनु कुमार आचार्य	22
6.	आश्रम के अतिथि और संस्मरण (संस्मरण)	डॉ. प्रभाकर माचवे	27
7.	अन्याय के खिलाफ़ लड़ाई (जीवनी)	–	35
8.	दोहे (पद्य)	कबीर, रहीम और बिहारी	41
9.	जब भोलाराम ने पंप लगाया (व्यंग्य)	ईश्वर शर्मा	45
10.	बातचीत की कला (निबंध)	मानवती आर्या, कृष्ण चंद्र आर्य	53
11.	सितारों से आगे (जीवनी)	विभागीय/प्रेमलता गर्ग	59
12.	पौधे के पंख (डायरी)	शशिप्रभा शास्त्री	66
13.	सूर और तुलसी के पद (पद्य)	सूरदास और तुलसीदास	72
14.	बहू की विदा (एकांकी)	विनोद रस्तोगी	75
15.	कामचोर (कहानी)	इस्मत चुगताई	84
16.	*एक तिनका (कविता)	अयोध्या सिंह उपाध्याय 'हरिऔध'	92
17.	सोना (रेखाचित्र-संस्मरण)	महादेवी वर्मा	93
18.	निर्माण (कविता)	डॉ. हरिवंशराय बच्चन	101
19.	जीवन का सच (पत्र)	विभागीय	104
20.	ईर्ष्या: तू न गई मेरे मन से (निबंध)	रामधारी सिंह 'दिनकर'	109

* केवल पढ़ने के लिए हैं। परीक्षा में इनमें से सवाल नहीं पूछे जाएँगे।

1

हम पंछी उन्मुक्त गगन के

हम पंछी **उन्मुक्त** गगन के
पिंजरबद्ध न गा पाएँगे,
कनक-तीलियों से टकराकर
पुलकित पंख टूट जाएँगे।

हम बहता जल पीनेवाले
मर जाएँगे भूखे-प्यासे,
कहीं भली है **कटुक निबौरी**
कनक-कटोरी की मैदा से,

स्वर्ण-शृंखला के बंधन में
अपनी गति, उड़ान सब भूले,
बस सपनों में देख रहे हैं
तरु की फुनगी पर के झूले।

ऐसे थे अरमान कि उड़ते
नील गगन की सीमा पाने,
लाल किरण-सी चोंच खोल
चुगते तारक-अनार के दाने।

होती सीमाहीन **क्षितिज** से
इन पंखों की होड़ा-होड़ी,
या तो क्षितिज मिलन बन जाता
या तनती साँसों की डोरी।

नीड़ न दो, चाहे टहनी का
आश्रय छिन्न-भिन्न कर डालो,
लेकिन पंख दिए हैं, तो
आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

–शिवमंगल सिंह 'सुमन'

शब्दार्थ–**उन्मुक्त**–आज़ाद, **पिंजरबद्ध**–पिंजरे में बंद, **पुलकित**–प्रेम/हर्ष आदि से गद्गद/रोमांचित, **कटुक**–कड़वा/कटु, **निबौरी**–नीम का फल, **क्षितिज**–जहाँ पृथ्वी और आकाश के मिलने का आभास होता है, **नीड़**–घोंसला

अभ्यास

कविता में से

1. किस कारण पक्षियों के पंख टूट जाएँगे?
2. पिंजरे में बंद रहकर मिलने वाले खाने व पानी की जगह पक्षियों को क्या पसंद है और क्यों?
3. पक्षियों के क्या अरमान हैं?
4. **भावार्थ स्पष्ट कीजिए–**

   लेकिन पंख दिए हैं, तो
   आकुल उड़ान में विघ्न न डालो।

5. **उचित उत्तर पर सही (✓) का निशान लगाइए–**

   (क) पक्षी कहाँ गा नहीं पाएँगे?

   ☐ घोंसले में ☐ पिंजरे में ☐ आकाश में ☐ पेड़ों में

   (ख) स्वर्ण-शृंखला के बंधन में पक्षी क्या भूल गए हैं?

   ☐ पढ़ना ☐ नहाना ☐ उड़ना ☐ सोना

   (ग) पक्षियों का क्या सपना है?

   ☐ स्वच्छंद रहने का ☐ पिंजरे में रहने का
   ☐ घोंसले पर रहने का ☐ महल में रहने का

6. **कविता की पंक्तियाँ पूरी कीजिए–**

   (क) बस .... में देख रहे हैं
   .... की फुनगी पर झूले।

   (ख) या तो .... मिलन बन जाता
   या तनती .... की डोरी।

बातचीत के लिए

1. 'कटुक निबौरी' और 'कनक कटोरी' के द्वारा किस ओर संकेत किया गया है?
2. हमें पक्षियों के प्रति संवेदनशील होना चाहिए। चर्चा कीजिए।
3. पक्षियों की और हमारी दिनचर्या में क्या अंतर है?

अनुमान और कल्पना

1. कल्पना कीजिए कि आप एक पक्षी हैं जिसे पिंजरे में बंद कर दिया गया है। आप उसमें से बाहर निकलने के लिए क्या प्रयास करेंगे?
2. यदि आप पंछी बनकर खुले गगन में घूमते हैं तो आपको धरती का नज़ारा कैसा लगेगा?
3. अगर कबूतर ने आपके घर के किसी कोने में घोंसला बनाकर उसमें अंडा दे दिया तो आप उसकी देखभाल कैसे करेंगे?

भाषा की बात

1. दिए गए विशेष्यों के लिए कविता में आए विशेषण शब्द लिखिए–

(क) .... पंख (ग) .... कटोरी

(ख) .... गगन (घ) .... निबौरी

2. नीचे लिखे क्रिया शब्दों को शब्दकोश के क्रमानुसार क्रम संख्या दीजिए–

☐ पाएँगे	☐ बहता	☐ उड़ान	☐ जाएँगे	☐ डालो
☐ देख	☐ बन	☐ भूले	☐ चुगते	☐ दिए

3. नीचे दिए गए शब्दों के पर्यायवाची शब्द एक कविता में से और एक अपनी ओर से लिखिए–

(क) पक्षी – ....

(ख) नभ – ....

(ग) पेड़ – ....

जीवन मूल्य

- 'हम पंछी उनमुक्त गगन के
  पिंजरबद्ध न गा पाएँगे'

1. पक्षियों को पिंजरे में बंद करना उनकी आज़ादी छीनना है? कैसे?
2. हमें किसी की भी स्वतंत्रता क्यों नहीं छीननी चाहिए?

कुछ करने के लिए

1. उन पक्षियों के बारे में पता करके एक रिपोर्ट तैयार कीजिए जिनकी संख्या कम होती जा रही है, इसके क्या कारण हैं और हम इनका संरक्षण किस प्रकार कर सकते हैं?
2. पक्षियों से जुड़ी अन्य कविताएँ पढ़िए और कोई एक कविता कक्षा में सुनाइए।

2

असल धन

बहुत दिनों की बात है, ईरान के किसी गाँव में एक चरवाहा रहता था। वह बड़ा ही गरीब था। बस, दिन में दो समय रूखी-सूखी रोटी मिल जाती थी। पहनने के लिए भेड़ की ऊन से बने फटे-पुराने कपड़े थे और रहने के लिए एक छोटी-सी झोंपड़ी थी जिसकी आधी छत गिर चुकी थी।

गरीब होते हुए भी गाँव वाले उसका बड़ा सम्मान करते थे। इसका कारण उसके अनेक गुण थे।

वह बड़ा ही बुद्धिमान था। गाँव वाले अपनी कठिन और जटिल समस्याएँ लेकर उसके पास आते और वह उन्हें बड़ी बुद्धिमानी से सुलझा देता था। गाँव के सब झगड़ों का निबटारा वही करता था।

धीरे-धीरे उसकी बुद्धिमानी की धूम दूर-दूर तक पहुँच गई। लोग आपस में यही बातें करते–

'दारा कितना बुद्धिमान है!'

'वह केवल एक चरवाहा है परंतु उसकी बुद्धि राजाओं की-सी है।'

'संसार का कोई ऐसा प्रश्न नहीं जिसका उत्तर उसके पास न हो।'

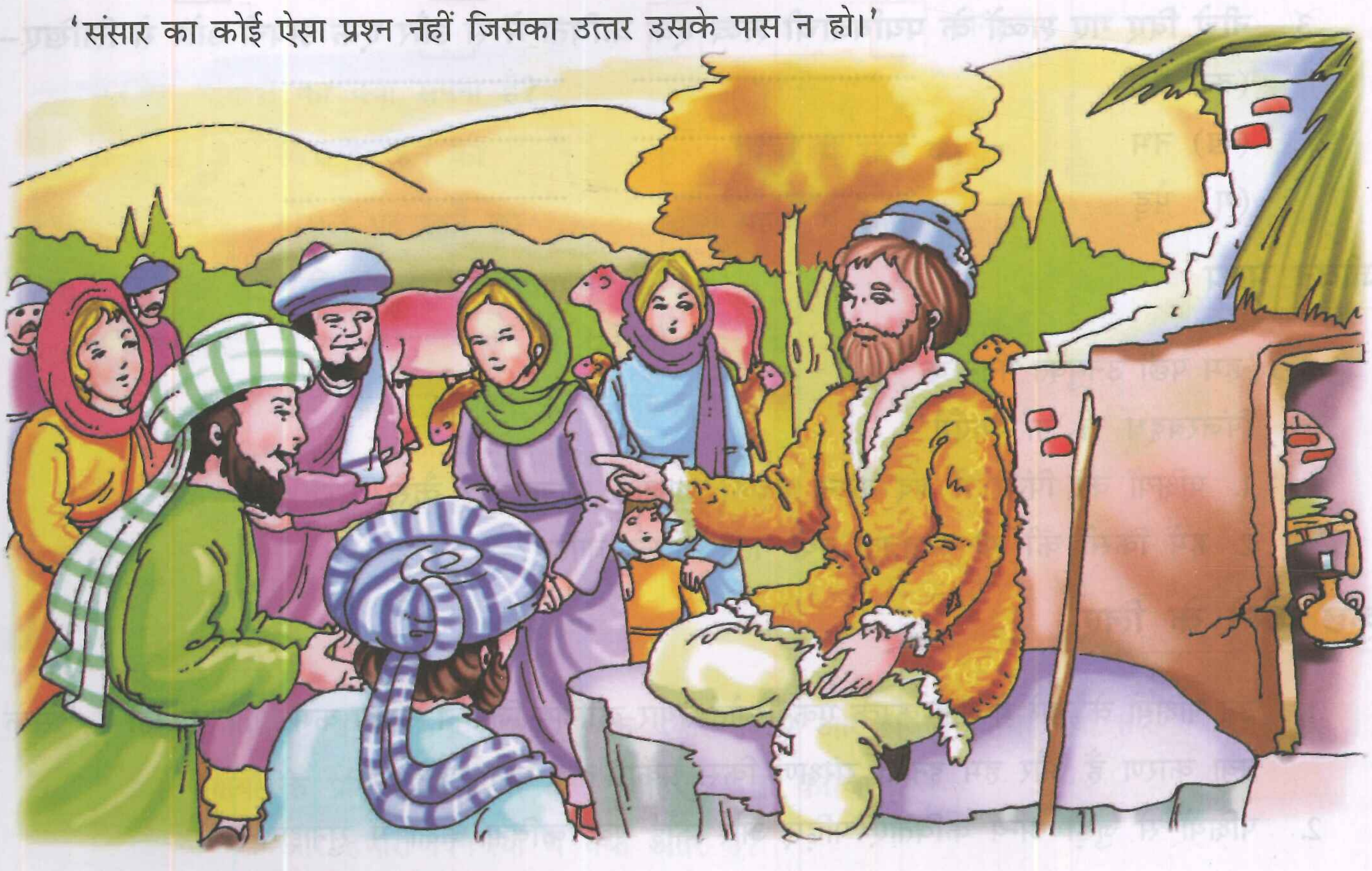

'ऐसी कोई समस्या नहीं, जिसे वह सुलझा न सके।'

'ईरान में ऐसी सूझ-बूझ रखने वाला दूसरा और कोई नहीं है।'

उसकी बुद्धिमानी की चर्चा ईरान के शाह के कानों तक भी जा पहुँची। उन दिनों शाह के सामने कुछ ऐसी समस्याएँ थीं जिन्होंने उसे परेशान कर रखा था।

उसने एक दूत को भेजकर अपनी समस्या बताई और दारा से सुझाव माँगा कि वह क्या करे।

दारा ने तुरंत ही समस्या को सुलझा दिया और वह भी ऐसी समझदारी से कि शाह दंग रह गया।

उसने मन में कहा–'यह दारा कोई साधारण चरवाहा नहीं है। ऐसी सूझ-बूझ रखने वाले का उचित स्थान भेड़ों के साथ जंगल में नहीं, महल में राजसिंहासन के पास है।'

उसने अपना दूत भेजकर दारा को अपने दरबार में बुलाया।

दारा ने झुककर उसे सलाम किया।

शाह ने मुसकराकर कहा, "ऐ दारा, हम चाहते हैं कि तुम जैसा बुद्धिमान हमारे महल में रहे ताकि हम राज्य की समस्याओं के विषय में तुम से सुझाव लेते रहें।"

दारा ने सिर झुकाकर उत्तर दिया, "आपका हुक्म सिर आँखों पर।"

दारा शाह के साथ दरबार में रहने लगा। शाह उसकी बातों से इतना प्रभावित हुआ कि दारा के बिना एक क्षण भी उसका मन नहीं लगता था। वह कोई भी काम उसके सुझाव के बिना नहीं करता था। वह हर समय उसे अपने साथ रखता और दरबार में उसे राजसिंहासन के पास ही बिठाता था।

जैसे-जैसे शाह के दरबार में उसका सम्मान बढ़ता गया, वैसे-वैसे दरबारियों के मन में उसके लिए जलन बढ़ती गई।

वे आपस में कुछ इस प्रकार की बातें करते–

'यह चरवाहा सिंहासन के पास बैठता है।'

'शाह ने इसे मुँह चढ़ा रखा है।'

'जब से यह दरबार में आया है, शाह हमें पूछता भी नहीं।'

'हमें तो इसमें कोई गुण दिखाई नहीं देता।'

दरबारी उसके खिलाफ़ शाह के कान भरने लगे, परंतु शाह ने उलटा उन्हें ही डाँट दिया, ''मैं समझता हूँ, तुम दारा से जलते हो। इससे अच्छा तो यह होता कि तुम अपने अंदर भी दारा जैसे गुण पैदा करते। अपने को अच्छा बनाना कठिन काम है। अच्छे लोगों में **कीड़े निकालना** सबसे सरल काम है। मैं तुम्हारी एक न सुनूँगा। तुम झूठे और दुष्ट हो।''

शाह के मन में दारा के लिए स्नेह और सम्मान दिन-प्रतिदिन बढ़ता ही गया। शाह ने उसे बहुत-सा धन दिया।

एक दिन शाह ने उसे बुलाकर कहा, ''मेरा मन तो नहीं करता परंतु कुछ ऐसी मजबूरी आ पड़ी है कि मुझे तुमसे दूर रहना होगा।''

दारा के मन को धक्का लगा। उसने दुख और आश्चर्य से पूछा, ''मेरा दोष क्या है?''

शाह ने हँसकर उत्तर दिया, ''तुम्हारा कोई दोष नहीं। सुनो, मैं तुम्हें उत्तरी ईरान के एक प्रांत का गवर्नर बना रहा हूँ। वहाँ का शासन बिगड़ चुका है। सरकारी अधिकारी और कर्मचारी भ्रष्ट हैं। अराजकता फैली हुई है। सब लोग मनमानी कर रहे हैं। जान और माल सुरक्षित नहीं। चारों ओर हाहाकार मच रहा है। वहाँ तुम्हारे जैसे बुद्धिमान, ईमानदार और समझदार शासक की बड़ी आवश्यकता है। मुझे विश्वास है, तुम्हारे जाने से प्रांत के हालात ठीक हो जाएँगे।''

दारा गवर्नर बनकर उत्तरी प्रांत की ओर चला।

उसके वहाँ पहुँचते ही प्रांत के हालात सुधरने लगे। वह स्वयं हर स्थान पर जाता और लोगों से पूछता कि उन्हें क्या दुख है। वह नगर-नगर जाकर दरबार लगाता और दोषियों को सज़ाएँ देकर लोगों को न्याय दिलाता। प्रांत में शांति फैल गई। लोग नए गवर्नर के गुण गाने लगे।

शाह के कानों तक सारी बातें पहुँच रही थीं। वह उन्हें सुन-सुनकर फूला न समाता।

दरबारियों की जलन और भी बढ़ गई और वे शाह के कान भरने के लिए नए-नए उपाय सोचने लगे।

दारा प्रांत के अनेक स्थानों का दौरा घोड़े पर सवार होकर करता था। दौरे पर जाते समय उसके साथ ही एक और घोड़ा भी होता था जिसकी पीठ पर एक बड़ा-सा बक्सा रखा रहता था। बक्से के बिना दारा कभी नगर से नहीं

शब्दार्थ–**कीड़े निकालना**–दोष निकालना

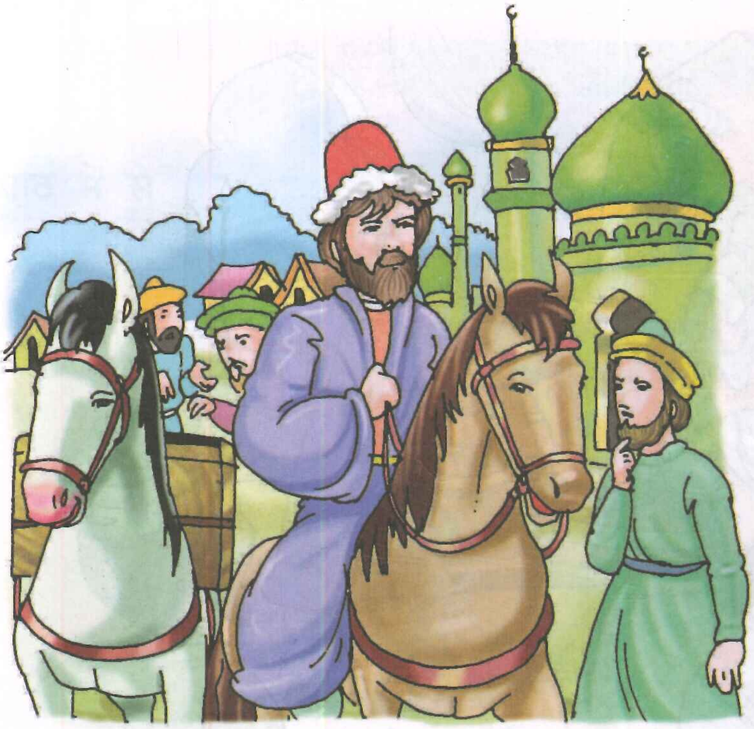

निकलता था।

दरबारियों को एक अवसर मिल गया।

उन्होंने शाह से कहा, ''आप दारा को ईमानदार समझते हैं, परंतु वह बेईमान है।''

शाह ने बिगड़कर कहा, ''तुम उससे जलते हो, इसीलिए ऐसी बातें करते हो। तुम मेरे कान नहीं भर सकते।''

वे बोले, ''जो हम कह रहे हैं, उसके सुबूत भी दे सकते हैं।''

उन्होंने कहा, ''क्या आप नहीं जानते कि दारा जहाँ भी जाता है, अपने साथ एक बक्सा ले जाता है?''

''हाँ, मैंने सुना है।''

उन्होंने पूछा, ''हुजूर, आपने कभी सोचा कि उस बक्से में ऐसी क्या वस्तु है?''

शाह ने विचार में डूबकर कहा, ''मुझे भी विचार होता है कि आखिर उस बक्से में वह क्या रखता है!''

दरबारी बोला, ''उस बक्से में दारा उस धन को रखता है जिसे उसने अपनी बेईमानी से एकत्र किया है। वह प्रजा को लूटता है। वह ईमानदार नहीं, ढोंगी है।''

शाह बड़ी उलझन में पड़ गया। समझ में नहीं आता था कि क्या करे! अगर दारा बेईमान था तो फिर संसार में कोई ईमानदार हो ही नहीं सकता था। वह बहुत दुखी था।

उसने दूत को भेजकर दारा से दरबार में हाज़िर होने को कहा।

दारा आश्चर्य में पड़ गया। इस प्रकार अचानक ही दरबार में हाज़िर होने का आदेश उसे अजीब-सा लगा। परंतु वह तुरंत ही राजधानी की ओर चल पड़ा और शाह के सामने आकर झुक गया।

उसके साथ उसका वह बक्सा भी था।

दरबार दरबारियों से खचाखच भरा हुआ था।

सबकी निगाहें उस बक्से पर गड़ी हुई थीं और दरबारी एक-दूसरे को इशारे करके मुस्कुरा रहे थे।

दारा ने अदब से कहा, ''ऐ ईरान के शाह, मैं हाज़िर हूँ। मेरे लिए क्या हुक्म है?''

शाह बोला, ''दारा, हमने तुझ पर भरोसा किया, तुझे सम्मान दिया और गवर्नर बनाया परंतु तूने हमें निराश किया।''

"वह कैसे, हुज़ूर?" दारा ने आश्चर्य से पूछा।

शाह क्रोध से चिल्लाया, "क्या यह सच नहीं कि तूने बेईमानी से धन एकत्र किया है? क्या हमारा दिया हुआ धन तेरे लिए काफ़ी नहीं था जो तू बेईमानी पर उतर आया?"

"यह झूठ है," दारा ने नरमी से उत्तर दिया, "मेरे पास ईमानदारी के सिवा और कुछ नहीं है।"

शाह ने झल्लाकर कहा, "तेरे इस बक्से में ऐसा क्या है जो तू इसे अपने साथ लिए फिरता है?"

दारा ने सिर झुकाकर कहा, "इस बक्से में मेरा असल धन है।"

दरबारियों की आँखों में चमक आ गई।

"खोल इसे!" शाह ने हुक्म दिया।

जब उसने बक्सा खोला तो सबकी आँखें आश्चर्य से फैल गईं। उसके अंदर भेड़ की ऊन से बना हुआ एक पुराना कोट था, जैसा कि चरवाहे पहना करते हैं।

"यह क्या है?" शाह ने पूछा।

दारा ने उत्तर दिया, "मैं इसी को पहनकर भेड़ें चराया करता था। मैं इसे इसलिए साथ रखता हूँ कि यह मुझे याद दिलाता रहे कि मैं एक गरीब चरवाहा था और मेरे मन में कभी घमंड पैदा न हो। यही मेरा असल धन है।"

दरबार में सन्नाटा छा गया था।

दरबारियों के सिर शर्म से झुके हुए थे।

शाह बोला, "धन्य है यह देश जिसने दारा जैसे महान इनसान को जन्म दिया।"

–अबराद मोहसिन व कामरान मोहसिन

अभ्यास

पाठ में से

1. गाँव वाले दारा का सम्मान क्यों करते थे?
2. शाह द्वारा दारा को अपने दरबार में रखने का क्या कारण था?
3. दरबारी दारा से ईर्ष्या क्यों करते थे?
4. शाह ने दारा को गवर्नर बनाकर क्यों भेजा?
5. दारा अपने बक्से में क्या रखता था और क्यों?
6. **कहानी के दिए गए अंश को पढ़कर तीन प्रश्न बनाइए–**

   दारा के पहुँचते ही प्रांत के हालात सुधरने लगे। वह स्वयं हर स्थान पर जाता और लोगों से पूछता कि उन्हें क्या दुख है? वह नगर-नगर जाकर दरबार लगाता और दोषियों को सज़ाएँ देकर लोगों को न्याय दिलाता। प्रांत में शांति फैल गई। लोग नए गवर्नर के गुण गाने लगे।

   (क) ....

   (ख) ....

   (ग) ....

बातचीत के लिए

1. चरवाहे का जीवन कैसा था?
2. कहानी में से ऐसे अंश छाँटकर बताइए जिनसे दारा के बुद्धिमान होने का पता चलता है।
3. दौरे पर जाते समय दारा दूसरा घोड़ा क्यों रखता था?
4. दरबारियों ने दारा के खिलाफ़ शाह से क्या कहा?

अनुमान और कल्पना

1. शाह ने दारा के पास दूत को भेजकर किस समस्या को सुलझाने के लिए कहा? अनुमान लगाइए, दारा ने समस्या को कैसे सुलझाया होगा?
2. यदि दरबारियों के कहे अनुसार दारा के बक्से से बेईमानी से एकत्र किया गया धन निकलता तो क्या होता?

3. पाठ का शीर्षक 'असल धन' क्यों रखा गया? इस पाठ का कोई अन्य शीर्षक सुझाइए तथा यह भी बताइए कि आपने यह शीर्षक क्यों चुना?

भाषा की बात

1. पाठ में से दो-दो व्यक्तिवाचक, जातिवाचक, भाववाचक संज्ञा शब्द छाँटकर लिखिए–

	व्यक्तिवाचक संज्ञा	जातिवाचक संज्ञा	भाववाचक संज्ञा
(क)	....	....	....
(ख)	....	....	....

2. मुहावरों के प्रयोग से भाषा आकर्षक बनती है इनका अक्षरशः अर्थ नहीं बल्कि लाक्षणिक अर्थ लिया जाता है। पाठ में अनेक मुहावरे आए हैं जैसे–'फूला न समाना' जिसका अर्थ है–बहुत खुश होना। अब आप दिए गए मुहावरों का वाक्य में प्रयोग कीजिए–

(क) कान भरना – ....

....

(ख) दंग रह जाना – ....

....

(ग) आँखों में चमक आना – ....

....

3. पाठ में कई 'विशेषण' शब्द आए हैं। आप बताइए कि वे किसकी विशेषताएँ बता रहे हैं–

विशेषण शब्द	**किसकी विशेषता बता रहे हैं**
(क) गरीब	....
(ख) रूखी-सूखी	....
(ग) भ्रष्ट	....
(घ) बुद्धिमान, समझदार, ईमानदार	....
(ङ) जटिल	....

जीवन मूल्य

1. क्या आपको घर में, विद्यालय में किसी से ईर्ष्या होती है? क्यों?
2. ईर्ष्या करना उचित है या अनुचित? क्यों?
3. मन में ईर्ष्या का भाव उत्पन्न ही न हो, इसके लिए आप क्या करेंगे?
4. आप अपने पास मित्रों और संबंधियों द्वारा भेंट की गई किन वस्तुओं को सँभालकर रखते हैं?

कुछ करने के लिए

1. कृष्णदेवराय-तेनालीरामा, अकबर-बीरबल के बुद्धिमानी भरे किस्से पढ़िए और उन्हें कक्षा में सुनाइए।
2. **नीचे दी गई समस्याओं के समाधान पर कक्षा में चर्चा कीजिए–**

   (क) यदि बारिश का पानी गली में भर जाए।

   (ख) यदि पड़ोसी देर रात तक तेज़ आवाज़ में संगीत बजाएँ।